Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

गोविंद शर्मा की लघुबाल कथा 'मटकू बोलता है' में सामाजिक मूल्य

मेघा बंसल* डॉ.नवज्योत भनोत**

* शोधार्थी (हिंदी) महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राज.) भारत
** प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (हिंदी) डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.) भारत

शोध सारांश – इस लघु बाल कथा के माध्यम से बालकों में सामाजिक और नैतिक मूल्यों का पोषण किया गया है। बच्चों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास का बचपन से ही ध्यान रखा जाए तो बच्चों का चौमुखी विकास संभव है। 'नैतिक कम्पास एक शब्द है जिसका उपयोग हमारे सही और गलत की आंतरिक भावना का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो हमारे कार्यों को निर्देशित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। विवेक एक व्यक्ति की आंतरिक नैतिक भावना है जो उसे अपने व्यवहार को विनियमित करने के लिए मार्गदर्शन करती है। अंतरात्मा की आवाज आंतरिक आवाज से मेल खाती है जो आपके व्यवहार का न्याय करती है। अंतरात्मा की आवाज कई लोगों के लिए नैतिक निर्णय लेने का स्रोत है।'[1]

आज के नौनिहाल कल के नागरिक हैं जो एक सभ्य समाज का निर्माण कर राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जाते हैं। प्रतीकात्मक शैली में लिखी गई इस कथा में मटकू अर्थात एक छोटे मटके का मानवीकरण किया गया है। कथा में मटकू को मुख पात्र बनाकर उनमें नैतिकता और मानवता भरी सामाजिक चेतना का संचार किया गया है।

शब्द कुंजी –अंतरात्मा ,इंसानियत, सेवा भावना, समाज सेवा, प्याऊ, सार्वजनिक सफाई, मानवता, अधिकार, कर्तव्य, संवेदनशीलता।

प्रस्तावना – बालकों के लिए, बालकों के नजरिए से, उन्हीं की भाषा में लिखा गया साहित्य, बाल- साहित्य की श्रेणी में आता है। सच्चा बाल-साहित्य वही है जो बच्चों में जिज्ञासा को बढ़ाए एवं उनमें नए-नए संप्रत्ययों का निर्माण करे।

आज हिंदी में वैविध्यपूर्ण मौलिक एवं समीक्षात्मक साहित्य रचा जा रहा है। अधिकांश रचनाकार जीवन शक्तियों से अनुप्राणित ,पौराणिक कथानकों को भी अपेक्षित परिवर्तित एवं परिवर्धित कर परिवेशिक यथार्थ के अनुकूल उपादेय बनाकर पोषक तत्व के रूप में सम्मिलित कर रहे हैं।

बालक के सर्वांगीण विकास तथा उसे देश और समाज के लिए उपयोगी बनाने में बाल-साहित्य की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है।हिंदी बाल साहित्य की लेखिका डॉ बानो सरताज के मतानुसार 'वह साहित्य जो बालकों में अनुकूल विचार और सृजनशीलता को प्रोत्साहित करके जीवन को समझने में सहायक होता है। बालकों में प्रेम, मानवता, निस्वार्थता, राष्ट्रीयता आदि भावों के विकास में सहायता करता है। कठिनाइयों, दुविधाओं से जूझना सिखाता है, बाल साहित्य है।'[2] बाल्यावस्था में बच्चों के भाव अत्यधिक कोमल होते हैं तथा उनकी ग्रहण क्षमता अत्यधिक तीव्र होती है। इस कच्ची उम्र में डाले गए संस्कार सुदृढ़ तथा स्थाई हो जाते हैं। डॉ श्री प्रसाद अपने एक आलेख में हितोपदेश के रचनाकार नारायण पंडित द्वारा रचित एक श्लोक का संदर्भ प्रस्तुत करते हुए कहते है।

यन्नवे मार्जने लग्न:, संस्कारो नान्यथा भवेत।
कथाच्छलेन बालानां, नीतिस्तदिह कथ्यते।

अर्थात् जैसे 'नए घड़े पर बना हुआ चित्रांकन (घड़े के पक जाने पर) पक्का हो जाता है, उसी प्रकार बचपन के संस्कार भी पक्के हो जाते हैं।'[3] अत: एक बाल साहित्यकार का कर्तव्य है कि वह बालकों को ऐसा साहित्य दे जो बाल जीवन के लिए हितकारी हो। गोविंद शर्मा जी ने इस लघु कथा के माध्यम से बालकों में सार्वजनिक सफाई के साथ-साथ समाज सेवा और कर्तव्यभावना के महत्व का प्रतिपादन किया है। इंसानियत के नाते, बिना किसी स्वार्थ के एक दूसरे की मदद करना तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्य को समझते हुए अंतरात्मा की आवाज को पहचानना ही इस कथा का मूल आधार है।

अध्ययन का उद्देश्य– आज का बालक अति आधुनिकतावाद और यथार्थवाद के वातावरण में विकसित हो रहा है। एकाकी परिवारों के एकाकीपन में उपजे राग- प्रेम, सहनशीलता, ममता, अपनत्व और नैतिक मूल्य, बालक में विलुप्त होते जा रहे हैं। इस शोध का उद्देश्य गोविंद शर्मा की लघु कथा 'मटकू बोलता है' का विश्लेषण कर आज के बालकों को सामाजिक मूल्यों से परिचित करवाना है। सपाटबयानी से कही गई बात, नैतिक शिक्षा के लिए दिए गए उपदेश, आज के परिप्रेक्ष्य से सुग्राह्य नहीं है। यदि बात को सीधे न कह कर किसी घटनाक्रम के माध्यम से बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया जाएं और उन्हें अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर उस घटना का विश्लेषण,- चिंतन कर, सही - गलत के निर्णय करने की स्वतंत्रता प्रदान की जाए तो निश्चित रूप से बालकों द्वारा ग्रहण की गई सीख अधिक उपयोगी और चिरस्थायी होगी।

बाल साहित्य बच्चों की जिज्ञासाओं को पूर्ण करने में सहायक होता है तथा समाज की विभिन्न स्थितियों अच्छा- बुरा, नैतिक-अनैतिक, सभ्य-असभ्य आदि का ज्ञान भी करवाता है। आज का साहित्यकार बच्चों के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारते हुए उनके लिए अलग साहित्य की रचना करता है। बाल साहित्य के समीक्षक डॉ. हरिकृष्ण देवसर का कहना है 'आज के बाल साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन और ज्ञानवर्धन करना ही नहीं है, बल्कि बालक को इस योग्य बनाना भी है कि वह जीवन के मूल्यों तथा भावी संसार के परिवेश से संबंध बनाए रखने में सफल हो सके।'[4]

इस कथा के माध्यम से गोविंद शर्मा जी ने सार्वजनिक सफाई का महत्व, समाज सेवा में योगदान एवं अंतरमन द्वारा सुझाए गए उचित कार्यों को प्रोत्साहित करने जैसे संवेदनशील विषयों की तरफ बालकों का ध्यान आकर्षित किया है। मटकू बोलता है' समाज के बीच उन भावों को भरने वाली कथा है जो सभ्य समाज का निर्माण और राष्ट्र का उत्थान करने में सहायक है। कथा का कथानक बच्चों में मानसिक और बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक एवं मूल्यवान सामाजिक चेतना का प्रादुर्भाव करता है। कथा में निहित इन सभी सामाजिक और नैतिक मूल्यों का विश्लेषण कर सार्वभौमिक सत्य की ओर प्रेरित करना ही इस शोध का उद्देश्य है।

शोध प्रविधि- इस शोध कार्य में सामाजिक मूल्यों के विश्लेषण हेतु मूल पुस्तक को आधार सामग्री के रूप में लिया गया है। शोध पत्र हेतु विश्लेषणात्मक विधि का उपयोग करते हुए पहले से उपलब्ध सूचनाओं आलेखों द्वारा तथ्यों का अध्ययन करते हुए ज्ञान मीमांसा पद्धति का प्रयोग कर अंतिम निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

विषय विस्तार- इस कथा में मटके के मानवीकरण द्वारा गहन सामाजिक संदेश दिया गया है। 'मटकू' नामक छोटा मटका यहां पंचमहाभूतों में से एक जल को अपने में समाहित कर उसके महत्व को प्रतिपादित कर रहा है।

मटकों की सुरक्षा के लिए बैठा बूढ़ा बाबा इंसानियत के नाते, सेवा भावना से प्याऊ पर चौकीदारी का कार्य करता है। प्याऊ की तो नींव ही समाज सेवा की भावना पर रखी जाती है। चाहे वह आज के आधुनिक हवादार, फिल्टर्ड और ठंडे पानी की व्यवस्था वाली प्याऊ हो या परंपरागत झोपड़ी में रखे मटकों वाले प्याऊ। बूढ़े बाबा कहते है 'मेरे परिवार के लोग, मेरे परिचित मेरी सेवा करते हैं। मैं बूढ़ा हो गया हूं इसलिए मैं मेहनत वाले काम नहीं कर सकता। प्याऊ का काम कम मेहनत का है। जब तक शरीर साथ देगा मैं यह सेवा का काम करता रहूंगा।'[5] इंसानियत एक श्रृंखला में चलने वाली प्रक्रिया है। यह एक का दूसरे के प्रति प्रतिदान है। मटके के रूप में सेवा की उपलब्धता और पात्रता यहां महत्तवपूर्ण माध्यम बनकर दूसरों की सेवा- और प्रेम के लिए अवसर उपलब्ध करवाती है।गीता के अनुसार फल की इच्छा से रहित कर्म को निस्वार्थ भाव से करने की भावना इस कथा के मूल में है।

इस लघु कथा की मूल भावना 'सार्वजनिक सफाई' को हर छोटे-बड़े किस्से के केंद्र में रखा गया है। जैसे किसी राहगीर द्वारा हाथ धोकर ही पानी पिया जाना, मटके से पानी पीने के बाद उस पर ढक्कन को याद से लगाना, यदि मटके खाली हो जाए तो उन्हें साफ करके ही पुन: पानी भरना, ठंडक की चाह में प्याऊ में घुसे जानवरों को भी वहां से हटाना इत्यादि।इन घटनाओं की रचना बाहरी स्वच्छता के साथ साथ आंतरिक स्वच्छता को भी दृष्टि देती है।

'मटकू कभी-कभी बोलता है। मटकू बोलता है, तब सुनाई देता है। पर ऐसा लगता नहीं है कि मटकू बोला है। सुनने वाला हैरानी से इधर-उधर देखता है।'[6] प्रतीकात्मक शैली में लिखी गई है यह लघु कथा, व्यक्ति के अंतरमन की ओर संकेत करती है। व्यक्ति का अंतरमन उसे सदैव सही कार्य करने तथा गलत को त्यागने का मशवरा देता है। यह कथा व्यक्ति विशेष द्वारा अपनी अंतरात्मा की बात सुनने अथवा अनसुना कर समाज विरोधी कार्य करने के बीच सही के चुनाव को लेकर सजग करती है। कथा में एक राहगीर द्वारा बिना हाथ धोए मटकू से पानी लेने के प्रयास में मटकू द्वारा उसे अपने भीतर देखने के लिए प्रेरित करना इसका उदाहरण है। वह कहता है 'कोई और न सही, मैं तो देख रहा हूं। तुम कहां से आ रहे हो, यह तो जानते ही हो। पहले अपने हाथ धो लो।'[7] वहां किसी को न पाकर भी राहगीर का इसे अपने दिल की आवाज समझ कर हाथ धो लेना अपने कर्त्तव्य को पहचानना है। इसी प्रकार एक अन्य राहगीर को मटकू घड़े पर ढक्कन लगाने का निर्देश देकर उसके दिल तक पहुंचता है। वह राहगीर प्रतिक्रिया देते हुए कहता है 'हां मैं जानता हूं। तो यह मेरे दिल की आवाज है। मैं यूं ही घबरा गया। चलो इसे ढक देता हूं।'[8] इस प्रकार अपने अंतकरण से जुड़कर विवेकशील क्षमता को जगाने का उद्देश्य यहां रखा गया है।

मटकू के माध्यम से अधिकार और कर्तव्य के बीच की महीन रेखा को उभार कर असंवेदनशीलता जैसे संक्रामक रोग से बचने की सलाह दी गई है।

समाज में रहते हुए मानव द्वारा बहुत सी वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग किया जाता है। प्रकृति द्वारा सबको समान रूप से बिना किसी भेदभाव के कुछ सुविधाएं दी गई है जैसे- सूर्य का प्रकाश, हवा, पानी, भूमि, ऋतुएं, मौसम आदि जिनके आवश्यकतानुसार उपभोग के बाद हमारे कुछ कर्तव्य भी होते हैं जो इन वस्तुओं तथा सेवाओं की अन्य लोगों के लिए उपलब्धता को सुनिश्चित करते है। कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए दूसरों के अधिकारों की रक्षा यहां महत्तवपूर्ण संदेश है। उदाहरणस्वरूप कथा में जब एक व्यक्ति मटकू से पानी पी लेने के बाद प्याऊ से जाने लगता है। तो मटकू अथवा उसकी अंतरआत्मा द्वारा सभी मटकों को भरने का सुझाव यहां मानवता का कार्य है। यहां उस व्यक्ति द्वारा इस कार्य के प्रति प्रथम दृष्टया प्रदर्शित उदासीनता आम व्यक्ति के स्वभाव की ओर इशारा करती है जिस पर नियंत्रण करने के लिए यहां मटकू के रूप में अंतकरण की आवाज को बुलंद किया गया है। इस संवाद के लिए गोविंद जी ने मटकू को मुखपात्र बनाते हुए गहरा संदेश समाज में प्रेषित किया है- वह कहता है 'प्याऊ में पानी पीने पर किसी एक आदमी या एक परिवार का अधिकार नहीं होता है। यह तो सबका है, यह सार्वजनिक है, यहां घड़े में पानी भरना किसी की नौकरी करना नहीं होता है। यह जल सेवा है और जन सेवा भी।'[9]

इस प्रकार जन सेवा के भावों को समझ कर जब लोग अपनी अंतरात्मा की आवाज से समाज के प्रति अपनी भूमिका को स्वीकार करते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने का कार्य करने लगते हैं तो मटकू बोलना बंद कर देता है अर्थात समाज के प्रति संवेदनशीलता का प्रसार हो जाने पर उसका दायित्व पूर्ण हो जाता है और उसे कोई सुझाव देने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। 'मटकू अब नहीं बोलता है। क्यों बोले? घड़ों में साफ पानी भरा होता है, वे ढके रहते हैं, लोग हाथ धोकर पानी पीते हैं। हां जिस दिन कोई गलती करेगा, मटकू बोलेगा।'[10]

निष्कर्ष के रूप में जीवन का मार्गदर्शन करने वाली अंत:करण की आवाज ही है जो सही गलत का अंतर बताकर व्यक्ति को ऊंचा उठाती है। इस कथा में अन्तरात्मा की आवाज वाला मटकू बालकों के भीतर सहज सामाजिक मूल्यों,नैतिक निर्देशों और गलत सही के बीच अंतर के लिए आंतरिक आवाज के रूप में प्रकट होकर नैतिक निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शक बनता है।मुख्य तौर पर संवेदशीलता के गुण को निरूपित करती यह अंतरात्मा की आवाज जागरूकता, आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करते हुए व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिक मानकों के अनुसार मूल्यांकन कर किसी भी कार्य के संभावित परिणामों पर चिंतन करना भी सिखाती है।

अत्यंत साधारण पात्र के माध्यम से आधुनिकता की होड़ में विलुप्त होती अंत:करण की आवाज को पहचान कर सार्वभौमिक सत्य का

प्रतिनिधित्व करने वाली स्वाभाविक स्थितियों को विकसित करने की प्रेरणा देती यह बाल-कथा निस्वार्थ भाव से जीते हुए कल्याणकारी मूल्यों को संरक्षित रखने की दृष्टि देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. प्रियंका सौरभ,अंतरात्मा की आवाज बताती है,स्वतंत्र प्रभात, सम्पादकीय, 21 जून 2.23,www.swatantraprabhat.com
2. डॉ. बानो सरताज,स्वातंत्र्योतर हिंदी बाल साहित्य,पृष्ठ संख्या 121
3. डॉ. श्री प्रसाद,हिंदी बाल साहित्य क्रमिक विकास, भारतीय बालसाहित्य के विविध आयाम, आलेख ,उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान प्रथम संस्करण, 1996 पृष्ठ संख्या 66
4. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे,हिंदी बाल साहित्य एक अध्ययन, पृष्ठ संख्या 236- 237
5. गोविंद शर्मा,'मटकू बोलता है', पृष्ठ संख्या, 6
6. गोविंद शर्मा,'मटकू बोलता है', पृष्ठ संख्या ,9
7. गोविंद शर्मा,'मटकू बोलता है', पृष्ठ संख्या,11
8. गोविंद शर्मा,'मटकू बोलता है', पृष्ठ संख्या16
9. गोविंद शर्मा,'मटकू बोलता है', पृष्ठ संख्या21
10. 'मटकू बोलता है', गोविंद शर्मा, पृष्ठ संख्या 23

****